ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।

– सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर।

O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotees.

वर्ष 41, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 फरवरी, 2018 से रविवार 18 फरवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज रोहिणी सै.-7, आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी एवं वेद प्रचार मंडलों के सहयोग से दो स्थानों पर एक साथ

194वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर भजन संध्या एवं मार्गदर्शन सम्पन्न

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी में 90 वर्ष से अधिक आयु वाले आर्य महानुभावों तथा आर्यसमाज रोहिणी सै.-7 के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का हुआ सम्मान

अपने भवन न होते हुए भी दिल्ली में प्रचार कार्यों में संलग्न 13 आर्यसमाजों के पदाधिकारियों का सभा की ओर से किया गया सम्मान एवं उत्साहवर्धन

पर्वतों में जैसे हिमालय उसी प्रकार महान व्यक्तियों में महर्षि दयानन्द की अलग पहचान है – *डॉ. महेश विद्यालंकार*

नई दिल्ली, 'आधुनिक भारत के निर्माता, महान सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के ज्ञान से आलौकित कर संसार से अज्ञानता का अंधकार मिटाया व विश्व में वेदों का प्रकाश फैलाया। देश की एकता अखण्डता तथा समाज में जागरूकता की आवश्यकता है।' ये उद्गार समाज सेवी महाशय धर्मपाल चेयरमैन एम. डी.एच. ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आयोजित ऋषि दयानन्द

– शेष पृष्ठ 4 पर

दिल्ली की आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं ने सार्वजनिक रूप से यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा, ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या, शुभकामना बैनर आदि लगाकर सैंकड़ों स्थानों पर मनाया जन्मदिवस

(विभिन्न आयोजनों की चित्रमय झांकियां अगले अंक में)

1. रामलीला मैदान रोहिणी सै.7 में आयोजित जन्मोत्सव समारोह में प्रस्तुति दे सुश्री अंजलि आर्या एवं मंडली। 2. (नीचे) समारोह में उपस्थित उत्तरी एवं पश्चिम दिल्ली के आर्यजन।

3. दशहरा ग्राउंड श्रीनिवासपुरी में सम्पन्न भजन संध्या समारोह में भजन प्रस्तुत करते श्री कुलदीप आर्य एवं टीम आर्य। 4. (नीचे) समारोह में उपस्थित दक्षिण एवं पूर्वी दिल्ली के आर्यजन।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2074 तदनुसार वीरवार 1 मार्च, 2018 सायं 3-30 से 7-15 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,

राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-30 बजे | विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति | बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम

पुष्पों द्वारा होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7-15 बजे

वेद-स्वाध्याय

आत्मज्ञान महिमा

विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति।
अहिर्न जूर्णामति सर्पति तवचमत्यो न क्रीलन्नसरद् वृषा हरिः।। - ऋ. 9/86/44
ऋषिः **अत्रिः**।। देवता - **पवमानः सोमः**।। छन्दः **विराड्जगती।**

शब्दार्थ - **विपश्चिते** = ज्ञानमय **पवमानाय** = सोमरूप आत्मा की **गायत** = स्तुति गान करो **अन्धः** = वह आध्यायनीय आत्मा **मही धारा न**= बड़ी जलधारा के समान **अति अर्षति** = अपने तटों रूप देहबन्धनों को तोड़कर चला जाता है **अहिः जूर्णा त्वचं न** = सांप जैसे अपनी जीर्ण त्वचा को वैसे वह अपने जीर्ण शरीर को **अतिसर्पति** = छोड़कर चला जाता है और **अत्यः न** = घोड़े के समान **वृषा हरिः** = पृथिवी और द्युलोक को **दाधार** = अपने अन्दर धारण करता है, एवं बाहर के भी इन दोनों लोकों को वह धारण करता है। **सः** = यह बलवान् और गतिशील आत्मा **क्रीडन्** = खेलता हुआ **असरत्**= एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र पर चला जाता है

विनय- उस ज्ञानमय आत्मा के स्तुति-गीत गाओ जोकि महा अद्भुत है। यह आत्मा समरस होकर अपने विज्ञानमय, मनोमय तथा प्राणमय विस्तारों में नाना रूप से पवमान हो रहा है। इन आन्तरिक शरीरों में जो लोग आत्मा के इन अद्भुत कोतुकों को देख पाते हैं वे आवेश में आकर, अवश होकर उसकी स्तुतियां गाने लगते हैं। अहो! मनुष्य अपने ही आत्मा को नहीं जानता। यदि वह इसके सामर्थ्यों, कार्यों और गतियों को जान जाए तो संसार की अन्य सब बाहरी बातों की प्रशंसाएं करना छोड़कर आत्मा के ही स्तोत्र-गान में मग्न हो जाए। जब आध्यान द्वारा आत्मा की शक्ति विज्ञानमय शरीर में विशेषतया प्रकट होती है तो मनुष्य में चैतन्य (उच्च ज्ञान) की बाढ़ आ जाती है। जेसे कोई बड़ी जलधारा बढ़ने पर अपने तटों को लांघकर इधर-उधर के क्षेत्र में भी भर जाती है, वैसे ही आत्मा में ज्ञान प्रकाश होने पर वह आत्मा इस स्थूल शरीर का और इन्द्रियों का अतिक्रमण कर जाता है, शरीर से बाहर भी उसे साक्षात् अनुभव होता हे ओर उसे अतीन्द्रिय ज्ञान हुआ करते हैं। उसक विज्ञानमय आदि आन्तर शरीर परिपक्व हो जाने पर उसके लिए स्थूल देह परम तुच्छ वस्तु हो जाती है। हम तो इस स्थूल देह को छोड़ने का विचार करते हुए ही डरते हैं और जब छोड़ना पड़ता है तो रोते-चीखते हुए इसे छोड़ने का विचार करते हुए ही डरते हैं और जब छोड़ना पड़ता है तो रोते-चीखते हुए इसे छोड़ते हैं, परन्तु वह जाग्रत् आत्मा स्थूल शरीर को इस प्रकार सरलता से और स्वभावतः त्याग देता है जैसे सांप आन्तर नयी त्वचा के तैयार हो जाने पर जीर्ण हुई केंचुली को सहज में छोड़ जाया करता है। वह जाग्रत आत्मा तो एक शरीर से दूसरे शरीर में या आन्तरिक संसार में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में इस प्रकार चला जाता है जैसे एक बलवान् ओर गतिशीय घोड़ा एक स्थान को छोड़कर दौड़ता हुआ-विहार करता हुआ-दूसरे स्थान पर जा पहुंचता है। वह बलवान् आत्मा अपने साथ प्राणों, इन्द्रियों आदि का हरण करता हुआ आनन्द से नये-नये स्थान पर चला जाता है। मरना-जीना आदि संसार की सब घटनाएं उसे लीला और खेल दृष्टिगोचर होती हैं। सचमुच वह खेलता हुआ ही आन्तर संसार में विचरता है, इस स्थूल देह के तो वह सर्वथा भूला-सा रहता है जिसके कारण हम मौत से डरते हैं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज द्वारा घोषित
'अंधविश्वास निरोधक वर्ष-2018' पर विशेष

नारी नरक का द्वार है तो पुरुष?

.....जब प्रकृति ने स्त्री पुरुष को एक दूसरे का पूरक बनाया है तो, नारी नरक का द्वार कैसे हो सकती है। कमाल है जिसकी कोख में जन्म लिया, जिस गर्भ में नौ महीने बड़े हुए, जिसका खून रगों में, जिसकी हड्डी-मांस-मज्जा से बने हों। पचास प्रतिशत जीवन का दान नारी ने दिया है, उसको ही नर्क कहते हुए शर्म भी न आयी।.....

26 जनवरी को देश ने 70 वां गणतंत्र दिवस मनाया। राजपथ पर सीमा सुरक्षा बल की महिला टीम ''सीमा भवानी'' ने मोटरसाईकिल पर हैरतअंगेज कारनामे दिखा कर पूरी दुनिया का ध्यान महिलाओं की ताकत की ओर खींचा। लेकिन इसी दौरान यौन शोषण के आरोपों से घिरे फर्जी बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित को लेकर कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति गीता मित्तल और सी. हरीशंकर की पीठ ने आश्रम के अधिवक्ता से आश्रम में औरतों और लड़कियों को बंधक बना कर रखने पर स्पष्टीकरण मांगा तो उनके वकील ने बाबा का बचाव करते हुए ''नारी को नरक का द्वार'' बताया हालाँकि न्यायाधीश महोदय ने उन्हें तुरन्त अदालत कक्ष से बाहर निकल जाने का आदेश दिया और भाषा पर नियंत्रण रखने की भी हिदायत दी। न्यायाधीश महोदय ने बाबा के वकील को भी यह कहा कि यह न्यायालय कक्ष है। यह आपका आध्यात्मिक कक्ष नहीं है कि जो आप नारी को नरक का द्वार बता रहे हो।

यह निश्चित ही दुःखद और अभद्र टिप्पणी थी जो दुनिया की आधी आबादी को अपमानित करती है। साथ ही प्रश्न यह है कि क्या वाकई आध्यात्म की दृष्टि से नारी को नरक का द्वार माना जाता है? क्या एक चौपाई या एक कथन को परम सत्य मान लिया गया और वैदिक काल से लेकर वेदों तक नारी की महिमा को उच्चारित करने वाले कथनों को मिटाने का कार्य हुआ? जबकि वेदों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि वेदों के मन्त्र दृष्टा जिस प्रकार अनेक ऋषि हैं, वैसे ही लोपमुद्रा, कात्यायनी, मदालसा जैसी अनेक ऋषिकाएँ भी हैं। ऋषी केवल पुरुष ही नहीं हुए हैं, वरन् अनेक नारियाँ भी हुई हैं। फिर एक को स्वर्ग और दूसरे को नरक का द्वार बताने का औचित्य क्या है? शायद ऐसा बताने वाले जरुर वेदों से अनभिज्ञ और मानसिक दृष्टि से दीन-हीन ही रहे होंगे।

दया, करुणा, सेवा-सहानुभूति, स्नेह, वात्सल्य, उदारता, भक्ति-भावना, वीरता आदि गुणों में नर की अपेक्षा नारी को सभी विचारवानों ने बढ़ा-चढ़ा माना है। इसलिये धार्मिक, आध्यात्मिक और ईश्वर प्राप्ति सम्बन्धी कार्यों में नारी का सर्वत्र स्वागत किया गया और उसे उसकी महत्ता के अनुकूल प्रतिष्ठा दी गयी है। मुझे नहीं पता तुलसीदास या किसी अन्य पौराणिक विद्वान की क्या मानसिक समस्या रही होगी कि उन्होंने किसी जगह नारी की महत्ता को कम आँका लेकिन क्या किसी एक के द्वारा, किसी एक की महत्ता, अस्वीकार देने से वह महत्वहीन हो जाता है? ईश्वर ने नारियों के अन्तःकरण में भी उसी प्रकार वेद-ज्ञान प्रकाशित किया, जैसे कि पुरुषों के अंतःकरण में। क्योंकि प्रभु के लिये दोनों ही सन्तान समान हैं। महान दयालु, न्यायकारी और निष्पक्ष प्रभु अपनी ही सन्तान में नर-नारी का भेद-भाव कैसे कर सकते हैं?

शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य ऋषि की धर्मपत्नी मैत्रेयी को ब्रह्मवादिनी कहा गया है, भारद्वाज की पुत्री श्रुतावती जो ब्रह्मचारिणि थी। कुमारी के साथ-साथ ब्रह्मचारिणि शब्द लगाने का तात्पर्य यह है कि वह अविवाहित और वेदाध्ययन करने वाली थी। महात्मा शाण्डिल्य की पुत्री 'श्रीमती' थी, जिसने व्रतों को धारण किया। वेदाध्ययन में निरन्तर प्रवृत्त थी। अत्यन्त कठिन तप करके वह देव ब्राह्मणों से अधिक पूजित हुई। इस प्रकार की नैष्ठिक ब्रह्मचारिणि ब्रह्मवादिनी नारियाँ अनेकों थीं। बाद में पाखण्ड काल आया और स्त्रियों के शास्त्राध्ययन पर रोक लगाई गयी, सोचिये यदि उस समय ऐसे ही प्रतिबन्ध रहे होते, तो याज्ञवल्क्य और शंकराचार्य से टक्कर लेने वाली गार्गी और भारती आदि स्त्रियाँ किस प्रकार हो सकती थीं? प्राचीनकाल में अध्ययन की सभी नर-नारियों को समान सुविधा थी। वैदिक काल में कोई भी धार्मिक कार्य नारी की उपस्थिति के बगैर शुरू नहीं होता था। उक्त काल में यज्ञ और धार्मिक प्रार्थना में यज्ञकर्ता या प्रार्थनाकर्ता की पत्नी का होना आवश्यक माना जाता था। नारियों को धर्म और राजनीति में भी पुरुष के समान ही समानता हासिल थी। वे स्वयं वर चुनती थीं, वे वेद पढ़ती थीं और पढ़ाती भी थीं. मैत्रेयी, गार्गी जैसी नारियां इसका उदाहरण हैं। यही नहीं नारियां युद्ध कला में भी पारंगत होकर राजपाट भी संभालती थीं। यदि नारी इतना कुछ करती थी तो स्वयं सोचिये कथित बाबा के अधिवक्ता की सोच कैसी होगी!

हाँ नारी के कुछ पल जरुर अँधेरे में बीते लेकिन इसके बाद 18वीं सदी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी शिक्षा का बीड़ा उठाते हुए कहा कि जब तक नारी शिक्षित नहीं होगी वह न अपने अस्तित्व को समझ सकती न अपने महत्व को। अतः जो शिक्षा तालों में बंद थी ऋषि दयानन्द ने पौराणिक समाज से टकराकर कन्याओं के लिए सुलभ कराया जिसका नतीजा आज दिख रहा है। आज भारतीय महिलाएं विश्व पटल पर भारत देश का नाम ऊँचा कर रही हैं। विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत को विभिन्न पदक दिलाये हैं। झूलन गोस्वामी से लेकर मिताली राज ने क्रिकेट में, रियो ओलम्पिक में पदक जीतने वाली पीवी संधू, साक्षी मलिक और दीपा कर्माकर से लेकर व्यापार जगत में अरुंधति भट्टाचार्य, चेयरमैन, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, चंद्रा कोचर आईसीआईसीआई बैंक की निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, इंदिरा नुई, पेप्सिको की मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रिया नायर, राजनीति में देखें तो पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी से लेकर वर्तमान में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण के साथ अगणित सफल और देश को गौरव दिलाने वाले महिलाओं के नाम अंकित है।

नारी का एक रूप एक नाम तो नहीं है, वह माँ, बहन, बेटी और पत्नी सभी रूपों में नारी ही है! तो फिर किस नारी पर आक्षेप किया है? उसके किस रूप को नरक का द्वार बताया है। मानव को चारों आश्रम के बिना मोक्ष नहीं मिलता है और गृहस्थाश्रम बिना नारी के संभव नहीं है। जब प्रकृति ने स्त्री पुरुष को एक दूसरे का पूरक बनाया है तो, नारी नरक का द्वार कैसे हो सकती है। कमाल है जिसकी कोख में जन्म लिया, जिस गर्भ में नौ महीने बड़े हुए, जिसका खून रगों में, जिसकी हड्डी-मांस-मज्जा से बने हों। पचास प्रतिशत जीवन का दान नारी ने दिया है, उसको ही नर्क कहते हुए शर्म भी न आयी। नारी तो अनुसूया भी थी, नारी तो सीता और रुक्मणी भी थी। तुलसीदास जी ने जो भी अनुभव किया हो, लेकिन सृष्टि नारी के बिना संभव नहीं है और अगर वह नरक का द्वार है तो फिर सृष्टिकर्त्ता को सिर्फ पुरुष का निर्माण करना चाहिए था जो सीधे स्वर्ग के द्वार पर खड़ा रहता और उसमें ही प्रवेश कर जाता? - ***सम्पादक***

सीमा पर बलिदान : अन्दर एफ.आई.आर.....!

....गुड़गांव निवासी कैप्टन कपिल कुंडू समेत चार जवान शहीद हो गए। इस हमले में दो नाबालिग समेत चार लोग घायल भी हो गए थे। अब बात यहाँ से शुरू होती है एक तरफ पाकिस्तान सीमा पर अघोषित युद्ध छिड़ा है। दूसरी तरफ पत्थरबाज और तीसरा मोर्चा प्राकृतिक आपदा यानी मौसम और आतंकी जो स्वर्ग से कश्मीर को जहन्नुम बनाये हुए है। इसके बाद देश के नेता अक्सर जवानों पर उँगलियाँ उठाने से बाज नहीं आते। जबकि कश्मीर में सेना को यह विशेषाधिकार है कि वह आत्मरक्षा में गोली चलाए। .....

पिछले सप्ताह कुपवाड़ा के माछिल सेक्टर में बर्फीले तूफान की चपेट में आने से भारतीय सेना की एक चौकी बुरी तरह प्रभावित हुई और हादसे में 3 जवान शहीद हो गए। ये मौसम की मार थी जिससे अक्सर देश के बहादुर सैनिकों को टकराना पड़ता है। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती इसके पहले जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के शाहपुर इलाके में एलओसी पर गोलाबारी हुई। जिसमें दो भारतीय सैनिक और एक स्थानीय नागरिक घायल हो गए थे। इसके बाद 28 जनवरी को जम्मू-कश्मीर के गनोपोरा शोपियां में सेना पर पथराव कर रहे आपराधिक तत्वों पर फायरिंग में दो लोगों की मौत हो गई थी। इस मामले में कश्मीर पुलिस ने गढ़वाल राइफल्स के मेजर आदित्य के खिलाफ हत्या और हत्या की कोशिश का मामला दर्ज किया है। हालाँकि आत्मरक्षा में किया गया प्रहार वध होता है। लेकिन बताया जा रहा है कि सेना के जवानों पर हत्या का मामला दर्ज किया गया है।

बात यहाँ भी खत्म नहीं होती इसके बाद 4 फरवरी को कुछ दिन की खामोशी के बाद पाकिस्तानी रेंजर्स ने जम्मू-कश्मीर के राजौरी और पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा पर गोलाबारी की। इसमें गुड़गांव निवासी कैप्टन कपिल कुंडू समेत चार जवान शहीद हो गए। इस हमले में दो नाबालिग समेत चार लोग घायल भी हो गए थे। अब बात यहाँ से शुरू होती है एक तरफ पाकिस्तान सीमा पर अघोषित युद्ध छिड़ा है। दूसरी तरफ पत्थरबाज और तीसरा मोर्चा प्राकृतिक आपदा यानी मौसम जो स्वर्ग से कश्मीर को जहन्नुम बनाये हुए है। इसके बाद देश के नेता अक्सर जवानों पर उँगलियाँ उठाने से बाज नहीं आते। जबकि कश्मीर में सेना को यह विशेषाधिकार है कि वह आत्मरक्षा में गोली चलाए। लेकिन इससे पहले मेजर लीतुल गोगोई तो आत्मरक्षा में बिना गोली चलाये ही एफ.आई.आर. के घेरे में आ गये थे। जब उन्होंने अपनी टीम को पत्थरबाजों से निकलने के लिए एक स्थानीय पत्थरबाज को जीप से बांधा था। इसमें शर्म की बात यह है कि हत्या करने पर उतारू पत्थरबाजों के खिलाफ कोई केस नहीं दर्ज नहीं किया गया। हर बार की तरह इस बार भी उन्हें मानवधिकार का कवच जो मिल गया है।

हालाँकि हमेशा से ही जम्मू-कश्मीर की राजनीति में सुरक्षा बलों की आलोचना करना राजनितिक दलों के लिए फायदेमंद है, लेकिन इन दलों को यह समझना चाहिए कि हमारे सुरक्षा बल विपरीत परिस्थितियों में कश्मीर में काम कर रहे हैं। सुरक्षा बलों को पाकिस्तान की गोलीबारी का भी मुकाबला करना होता है तो अंदर से पाक प्रशिक्षित आतंकियों के हमले भी झेलने पड़ते हैं। बर्फ के तूफान और भूस्खलन और हिमस्खलन आदि से टकराना पड़ता है और इस पर यदि पत्थर भी फैंकें जाएं तो हालातों का अंदाजा लगाया जा सकता है।

आए दिन सुरक्षा बलों के जवान शहीद हो रहे हैं। कश्मीर को बचाने के लिए हमारे जवान बड़ी से बड़ी कुर्बानी दे रहे हैं। माताओं की गोद सूनी हो रही है, बहनों से भाई बिछड़ रहे हैं और पत्नियों की मांग उजड़ रही है। राजनेता उस मां और पत्नी का दर्द समझे, जिनका बेटा और पति आतंकवादियों की गोली से मारा गया। उन बच्चों का दर्द महससू करे, जिनके पिता कश्मीर की रक्षा में शहीद हो गए। पूर्व सी.एम. उमर अब्दुल्ला भी इस घटनाक्रम में राजनीतिक रोटियां सेक रहे हैं। किसी को भी कश्मीर के आम नागरिक की चिंता नहीं है।

यदि सुरक्षा बलों पर एफआईआर होगी तो फिर कश्मीर की रक्षा कौन करेगा? और यदि कश्मीर असुरक्षित होगा तो ना महबूबा बचेंगी और ना उमर अब्दुल्ला। हमारे जवान अपनी कुर्बानी देकर ही महबूबा और उमर जैसे नेताओं को बचाए हुए हैं। ऐसे नेता माने या नहीं, लेकिन यदि सुरक्षा बल कमजोर होते हैं तो कश्मीर पर पाक समर्थित आंतकवादियों का कब्जा हो जाएगा। महबूबा और उमर अब्दुल्ला को स्वार्थ की राजनीति छोड़कर कश्मीर में शांति बहाली के प्रयास करने चाहिए।

कश्मीर में पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाना आम बात है। पाकिस्तान के पैसे से अलगाववादियों द्वारा पोषित पत्थरबाज और मस्जिदों से आजादी के तराने गाते मौलवी एक बार पाक अधिकृत कश्मीर के मुसलमानों के हालात देख लें, किस तरह वहां के मुसलमानों को परेशान किया जाता है। जबकि हमारे कश्मीर में तो सरकार की ओर से अनेक रियायतें मिली हुई है। आज यदि कश्मीर में पर्यटन उद्योग फिर से शुरू हो जाए तो कश्मीर देश का सबसे समृद्ध राज्य बन सकता है।

सवाल यह है कि सेना को इन हमलों से बचाया कैसे जाए? दुनिया जानती है भारत की सेना विश्व में सबसे अनुशासित सेनाओं में से एक है। तो इसमें पहला कदम तो यह होना चाहिए कि स्थानीय राजनेताओं द्वारा सेना के मनोबल पर हमला करने से बचना चाहिए। दूसरा अलगाव वादियों की धरपकड़ कर कश्मीरी आवाम को उनके द्वारा फैलाएं जा रहे मजहबी जहर से मुक्ति दिलानी चाहिए। साथ ही तरीका यह है कि 740 किलोमीटर की एलओसी में उन जगहों पर पाकिस्तानी सैनिकों को निशाना बनाएं, जहां वे कमजोर हैं। कुल मिलाकर देखें, तो पाकिस्तान पर दबाव बनाने की कई रणनीति हमारे पास है। मगर मुश्किल यह है कि हमारे पास फिलहाल कश्मीर को बचाने की कोई राजनितिक एक राय नहीं हैं। हमारे नीति-नियंताओं को समझना होगा कि चुनावी भाषणों में राष्ट्रीय सुरक्षा की बातें कहने भर से हालात अपने हक में नहीं हो जाते, इसके लिए जमीन पर ठोस कार्रवाई करनी होती है। जो आज सेना कर रही उससे आतंक की कमर टूट रही है। जिसके कारण कश्मीर की राजनीति में बैचेनी साफ दिख रही है। पर सवाल यह भी है यदि आज सेना कश्मीर से आतंक को जड़मूल से खत्म कर देती है तो कश्मीर के कथित रहनुमाओं के चूल्हे कैसे जलेंगे? सारी दुनिया यह भी जानती है कि कश्मीर मूल समस्या मदरसों द्वारा बोया जा रहा मजहबी उन्माद है जिसका ग्रास हमारी सेना के जवान भी बन रहे हैं।

- राजीव चौधरी

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

बोध कथा

जोंक और मनुष्य में समानता

मैं छोटा-सा था। एक गाय थी हमारे घर में। पिता जी ने कहा-''जा उसे घुमा ला। पानी पिला ला।''

हमारे गाँव के पास एक तालाब था। शायद उसे 'मुसद्दीवाना' कहते थे। गाय उसके किनारे-किनारे घूमने लगी। मैं कुछ दूर जाकर खेलता रहा। कुछ देर बाद गाय को लेने आया तो देखा कि उसके साथ चार-पाँच जोंकें चिपटी हुई हैं-बहुत फूली हुई, मोटी बनी हुई। मैं बड़ा घबराया कि अब पिताजी मारेंगे। रोता-रोता उनके पास पहुंचा। उन्होंने पूछा-''रोता क्यों है?''

मैंने कहा-''ये जोंकें सारा दूध पी गई। अब गाय दूध कैसे देगी?''

पिताजी ने हँसते हुए कहा-''घबराओ नहीं, ये जोंकें हैं। ये दूध नहीं पीतीं, ये रुधिर पीती हैं।''

हाय रे दुर्भाग्य! दूध-जैसी अमृत वस्तु के पास पहुंचकर भी अभागी जोंकों को दूध पीने की नहीं सूझती; केवल रुधिर-पान करती रहीं। किन्तु केवल वे जोंकें ही तो अभागी नहीं। प्रत्येक मनुष्य अभागा है। जोंक की भाँति उसे केवल मैला रुधिर मिलता है। ऐसे मनुष्य से कहता हूं-''अपने लिए दुर्भाग्य पैदा मत कर! बछड़ा बन, जोंक न बन! अमृत-भरा दूध पी, रुधिर-पान न कर!''

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

194वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव के अवसर पर भजन संध्या एवं .....

के 194वें जन्मोत्सव पर 10 फरवरी 2018 को दशहरा ग्राउन्ड श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली में व्यक्त किये। सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि 'महर्षि दयानन्द का सपना था कि सामाजिक प्रदूषण दूर हो, इस लक्ष्य को लेकर घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ से सामाजिक चेतना उत्पन्न करने की जरूरत है।'

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वेद प्रचार मण्डल के सहयोग से आर्य समाज श्रीनिवासपुरी के तत्त्वावधान में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती के 194वें जन्मोत्सव कार्यक्रम में वैदिक विदुषी विमलेश आर्या ने कहा, समाज में नारियों की स्थिति अत्यधिक शोचनीय थी पर्दाप्रथा, नारी अशिक्षा तथा सती प्रथा जैसी घोर कुरीतियों को दूर करके उन्होंने नारी को समानता का अधिकार दिलाया। कार्यक्रम में दक्षिण दिल्ली के सांसद रमेश बिधूड़ी ने भी अपने प्रेरक विचारों में महर्षि दयानन्द के जन-कल्याण कार्यों की सराहना करते हुए उनके पद चिन्हों पर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम में विधायक श्री अवतार सिंह कालका व अन्य प्रतिष्ठित जन भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठजनों, कर्मठ विद्वानों व कार्यकत्ताओं को शॉल व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव श्रीनिवासपुरी को सफल बनाने में ओम प्रकाश वर्मा, सुशील आर्य, ओम प्रकाश चतुर्वेदी, चतर सिंह नागर, का विशेष योगदान रहा। आर्य समाज श्रीनिवासपुरी के स्वर्णजयन्ती के उपलक्ष्य में युवा विद्वान कुलदीप आर्य के सान्निध्य में संगीतमय राम कथा का भी भव्य आयोजन हुआ। इसी के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वेद प्रचार मण्डल के सहयोग से व आर्य समाज रोहिणी की ओर से रामलीला मैदान सैक्टर-7 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस पर वैदिक भजनोपदेशिका श्रीमती अंजली आर्या के मनोहर भक्ति गीतों की अमृत वर्षा की।श्रीमती पुष्पा जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों पर मार्मिक कविता प्रस्तुत की। श्री ओम प्रकाश चुघ ने 'चमकें जब तलक ये सूरज चांद तारे. ..' सुन्दर कविता प्रस्तुत की। वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा 'महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 16 बार विषपान करके समाज से अंधविश्वास व पाखण्ड को दूर किया। समस्त पर्वतों में हिमाचल की अलग पहचान है उसी प्रकार महान व्यक्तियों में महर्षि दयानन्द की अलग पहचान है।' निगम पार्षद आलोक शर्मा ने कहा, 'महर्षि दयानन्द के हिन्दू जाति पर अनेक उपकार है जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता तथा भारत निमार्ण में महर्षि जी का विशेष योगदान है।' दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान धर्मपाल आर्य अपने उद्बोधन में कहा कि 'सत्यार्थ प्रकाश की रचना करके महर्षि दयानन्द समाज में वैचारिक क्रांति की। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई भी मतावलम्बी अपने मत की शेखी नहीं मार सकता।' एस. एच.ओ. श्री विरेन्द्र कुमार, रोहिणी क्षेत्र ने अपने वक्तव्य में कहा 'वैज्ञानिक बताते हैं प्रदूषण बहुत है लेकिन प्रदूषण दूर कैसे हो यह आर्य समाज बताती है।' एस.एच.ओ. ने कहा बदलते माहौल में माता-पिता को अपने युवा होते बच्चों पर विशेष ध्यान रखना होगा जिससे वे बिगड़ने न पाएं। हमें अपने बच्चों से रोज बात-चीत करनी चाहिए वे कहां जाते हैं किससे बातें करते हैं उनकी दिनचर्या क्या रहती है यह आपको ज्ञात होना चाहिए। तभी एक स्वच्छ राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।'

कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य सुखदेव तपस्वी, आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री एवं श्री रवि शास्त्री ने संयुक्त रूप से यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर बालक उद्वीर का अन्नप्राशन भी सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री नरेश पाल मंत्री आर्य समाज रोहिणी ने किया। इस अवसर पर सूरीनाम डॉ. सुश्री रामअवतार ने अपनी महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभाई। कार्यक्रम में सर्वश्री ओम प्रकाश आर्य उपप्रधान, सुरेन्द्र आर्य प्रधान, जोगेन्द्र खट्टर महामंत्री वेद प्रचार मण्डल, अरुण प्रकाश वर्मा प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड, राजेन्द्र आर्य, नरेश पाल आर्य, संजीव आर्य, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, वीरेन्द्र आर्य पूर्व संचालक, जितेन्द्र खरबन्दा, आलोक शर्मा, सर्वश्रीमती वीणा आर्या, प्रकाश कथूरिया महामंत्री महिला सभा, कंचन आर्या एवं आर्य समाज रोहिणी के समस्त पदाधिकारियों की अपनी-अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठजनों, कर्मठ विद्वानों व कार्यकत्ताओं को शॉल व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री धर्मपाल आर्य प्रधानमहर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव को सफल बनाने में नरेश पाल आर्य, संजीव गर्ग, सुरेन्द्र आर्य, जोगेन्द्र खट्टर का विशेष योगदान रहा।

- चन्द्र मोहन आर्य, पत्रकार

पुस्तक परिचय

भारत का एक ऋषि

19वीं सदी के महानतम ऋषि दयानन्द सरस्वती के विशाल व्यक्तित्त्व अनेक सामाजिक, राष्ट्रीय मानवतावादी, वेदादि से सम्बन्धित कार्यों से प्रभावित होकर भारतीय लेखकों ने और विदेशियों ने ऋषि के विषय में अपने-अपने उद्गार प्रकट किये थे, उनमें से एक फ्रेंच लेखक सन्त रोमां रोल्या हैं। रोमां रोल्या ने भारत से हजारों मील दूर बैठे होने पर भी ऋषि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उनके जीवन व कार्यों की प्रशंसा की है। भारत में बैठे पक्षपाती लोग जो ऋषि दयानन्द के उज्ज्वल व्यक्तित्व को प्रकट करने से डर रहे थे और सत्य पर पर्दा डाल रहे थे, लेकिन सन्त रोमां रोल्या और अन्य पाश्चात्य लेखकों ने ऋषि दयानन्द सरस्वती के विषय में अपने विचार प्रकट किये हैं।

इस लघु पुस्तक में लेखक ने संक्षेप में ऋषि दयानन्द के महान् व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डाला है। भारत देश में अनेक बुराईयां, अनुचित परम्पराएं, अन्धविश्वास आदि का भयंकर साम्राज्य था, लेकिन ऋषि ने इन सभी बुराईयों के विरुद्ध क्रान्तिकारी वैचारिक आन्दोलन आरम्भ करके भारत की डूबती हुई नैय्या को पार लगाया। जो अछूत माने जाते थे उनको पूर्ण सम्मान दिलाया और महिलाओं को अनेक अधिकारों के साथ वेद पठन-पाठन

का अधिकार भी प्रदान करवाया।

ऋषि दयानन्द ही भारत के पुनर्जागरण आन्दोलन के सच्चे और प्रथम उद्घोषक थे। स्वदेश, स्वभाषा, स्वराष्ट्र और स्वसंस्कृति-सभ्यता की बात कहने वाले व्यक्ति ऋषि दयानन्द ही थे। यह लघु पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति को ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व और कार्यों की जानकारी प्रदान करेगी।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की

आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री गायत्री प्रकाश आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

आर्य समाज महू द्वारा आयोजित अनूठा कार्यक्रम : अष्टम् गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज महू द्वारा आयोजित प्रति दो वर्ष में सम्पन्न होने वाले गायत्री महायज्ञ 24 से 28 दिसम्बर 2017 तक निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। यह आठवां प्रयास था, जिसका आयोजन नगर के मध्य स्थित इन्दिरा गांधी ग्राउण्ड टाउन हाल के पीछे

महू में किया गया था। अनेक कार्यकर्ताओं तथा सहयोगियों के प्रयास का परिणाम था कि ईश्वर की कृपा से यह एक भव्य एवं विशाल कार्यक्रम, जनमानस पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ते हुए सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की रोचकता और प्रभाव इतना था कि उसमें महू नगर या आसपास के क्षेत्र के व्यक्ति ही सम्मिलित नहीं हुए अपितु प्रदेश के दूरदराज के क्षेत्र भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर तथा प्रदेश के बाहर दिल्ली, राजस्थान, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, विदर्भ से भी कुछ महानुभाव इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

24/12/2017 को प्रात:आर्य समाज मन्दिर से एक भव्य शोभायात्रा प्रारम्भ हुई जिसमें हजारों की संख्या में नागरिक उपस्थित हुए। सूचना देते हुए वाहन सबसे आगे, फिर दो अश्वों पर ओ३म् ध्वज लिए केसरिया साफा बाँधे 2 बालक बैठे थे, उसके पीछे आगे-आगे गायत्री मन्त्र बजाते हुए बैण्ड बाजे तथा अश्व पर बैठे ओ३म् ध्वज लिये नवयुवक उसके पश्चात् पं. राजगुरु शर्मा वैदिक छात्रावास महू के विद्यार्थी उसके पश्चात् कानड़ के दिनेश वैरागी, संजय, विनोद आर्य भजन प्रस्तुति करते हुए ट्रॉली पर थे।

9 कुण्डिय यज्ञशाला में प्रतिदिन 72 से 80 व्यक्ति बैठकर आहुति देते थे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्रजी शास्त्री के द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। साथ ही मन्त्रपाठ के लिये गुरुकुल के ब्रह्मचारी भी आये थे, जिनके द्वारा सस्वर वेदमन्त्रों का पाठ सुनकर एक आध्यात्मिक वातावरण स्वत: निर्मित हो रहा था। पूर्णाहुति में लगभग 1000 से अधिक व्यक्तियों ने आकर अपनी आहुति दी। यज्ञ के पश्चात् डॉ. वागिश जी शर्मा, स्वामी ऋतस्पतिजी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ. सोमदेवजी आदि के प्रवचन, भजन होते, जिसे बहुत ही आनन्द और श्रद्धा के साथ उपस्थित श्रद्धालु सुनते।

वेद कथा की वक्ता डॉ. अन्नपूर्णा जी ने मनुष्य जीवन से संबंधित जीवनोपयोगी निर्माण करके वेदों में उल्लेखित रहस्यों से जन साधारण को अवगत करवाया।

सायंकालीन सत्र में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हेतु विद्वान आमन्त्रित किये गये थे जिनमें आचार्य वागिश शर्मा, एटा, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, डॉ. सोमदेवजी। देर रात तक प्रबुद्ध नागरिकों ने तन्मयता से व्याख्यानों को सुना। भजन प्रस्तुति के लिए प्रमुख रूप से आमन्त्रित श्री दिनेश पथिक (अमृतसर), श्री भानुप्रकाशजी (बरेली), श्री नीरज शर्मा, मण्डलेश्वर के अतिरिक्त श्री काशीरामजी अनल, विनोद, संजय आर्य आदि सहित अनेक भजनोपदेशक उपस्थित थे। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से संन्यासी भी पधारे थे।

इस अवसर पर सर्वश्री विनय आर्य उपमन्त्री-सार्व. आ. प्र. सभा दिल्ली, दलवीरसिंह राघव, रमेश गोयल, लक्ष्मीनारायण आर्य, मानसिंह यादव, अतुल वर्मा, गोविन्द आर्य, दक्षदेव गौड़, कमलेश याज्ञिक, काशीराम अनल, जगन्नाथ सिंह, एवं श्री दरबारसिंह आदि पधारे थे।

कार्यक्रम की सफलता हेतु पूरी समिति के सदस्यों ने पूर्ण निष्ठा और अपनी सामर्थ्य से इस हेतु प्रयास किया वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। इस मध्य कार्यक्रम से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने गुटखा, तम्बाकू, सिगरेट तथा मांसाहार त्यागा। कुछ व्यक्तियों ने दैनिक यज्ञ करने का संकल्प लिया। वहीं कुछ लोगों ने अपने नाम के आगे जाति सूचक नाम के स्थान पर आर्य लिखने की घोषणा की।

समिति के सदस्यों ने प्रतिवर्ष करने का निश्चय किया है। यह कार्यक्रम अब माह नवम्बर 2018 में पुन: आयोजित किया जाएगा।

-प्रकाश आर्य

संयोजक, गायत्री महायज्ञ समिति

मातृशक्ति

प्रभु भक्ति

स्नान के पश्चात् प्रभु का चिन्तन करना भी मनुष्य को अपनी दिनचर्या का एक मुख्य अंग बना लेना चाहिए। इसलिए बच्चों को प्रारम्भ से ही प्रभु भक्ति की ओर अग्रसर करना चाहिए। प्रभु भक्ति आत्मिक भोजन तो है ही, किन्तु इससे शरीर भी स्वस्थ, बलवान् और नीरोग बनता है। उस सर्वशक्तिमान् का एकाग्रचित्त होकर चिन्तन करने से साधक को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्ति अवश्य प्राप्त होगी इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। ईश्वर भक्ति से मनुष्य को एक अलौकिक आनन्द और अद्भुत शान्ति प्राप्त होती है, उसका शरीर के ऊपर भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। शरीर की सब धातुओं-उपधातुओं की विषमता दूर होकर उसमें समता व शक्ति का संचार होता है। संत, महात्मा तथा योगी जनों के स्वस्थ, बलवान् ओर दीर्घजीवी होने का ईश्वर भक्ति ही एक मुख्य कारण है। संत कबीर ने एक भजन में कहा है-

औषध खाऊं न बूटी खाऊं, न कोई वैद्य बुलाऊं। एक ही वैद्य मिलो अविनाशी, वाही को नबज दिखाऊं।।

ईश्वर भक्ति जहां शारीरिक उन्नति के लिये आवश्यक है, वहीं आत्म-कल्याण के लिये भी परम आवश्यक है। जिस प्रकार भोजन के बिना शरी का काम नहीं चल सकता, सच पूछा जाये तो शरीर के लिए भोजन इतना आवश्यक नहीं, जितना आत्मा के लिए ईश्वर भक्ति है। इसीलिए ईश्वर भक्ति को आत्मिक खुराक अर्थात्

भोजन कहा गया है। ईश्वर भक्ति से ही अज्ञान तिमिर का नाश होकर आत्मा में ज्ञान ज्योति का प्रकाश होता है। ईश्वर भक्ति के बल से ही मनुष्य संसार में अपनी सब शुभ कामनाएं पूर्ण कर सकता है। प्रभ भक्ति से रोग, शोक, सन्ताप, दरिद्रता, चिन्ता, निर्बलता आदि जितने भी क्लेश हैं, वह सब दूर हो जाते हैं। प्रभु का अनन्य भक्त पर्वत के समान भारी से भारी आपत्तियों और संकटों में भी नहीं घबराता। प्रभु भक्तिहीन मनुष्य न तो सच्ची शान्ति और न आनन्द का अनुभव कर सकता है और न ही प्रभु के इस परम सुन्दर और सुखमय संसार का सच्चा रसास्वादन कर सकता है। अत: आत्मकल्याणाऽभिलाषी जनों को प्रतिदिन प्रभु का चिंतन अवश्य करना चाहिए और बच्चों को भी प्रभु भक्ति के लिए प्रेरित करना चाहिए।

- आचार्य भद्रसेन

साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

54 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

Veda Prarthana - 31

Knowing God is the Only Way to Find Bliss in Life

- Acharya Gyaneshwarya

वेदाहमेतं पुरुषं महानतमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

Veda aham etam purusham mahantam adityavarnam tamasah parastat. Tameva viditva ati mrityumeti na anyah pantha vidyate ayanaya. (Yajur Veda 31:18)

Veda aham I know etam purusham God, the Supreme Being who is Perfection, mahantam who is Greater than the greatest, adityavarnam who is Supreme Light and Pure Radiance, tamasah parastat where there is no darkness or ignorance, Tameva viditva by knowing Him Alone, ati mrityumeti one overcomes misery and death and finds bliss na anyah there is no other pantha vidyate path known ayanaya to find moksha or bliss.

Among all the fears and unhappinss' of life, the foremost for almost all persons is the fear of immient death. The knowledge of imminent death reminds one of the final loss and end of all one has struggled and worked hard to accomplish throughout life since early childhood. Death reminds one of the termination of all the relationships one has had, nurtured and treasured in life such as parents, teachers, spouse, children and close friends. Similarly death reminds one of all the struggles one made to earn and secure wealth and prosperity (or failed to achieve it) that will all end in the near future. Almost nobody wants or looks forward to death, even though sometimes when a person is suffering immense pain due to a terminal illness or is extremely depressed, he/she may say so to get rid of the pain or sffering. To' prevent and conquer death and create immortality' many physicians and scientists are doing all types of research. the truth, however, is that one who is born will certainly die one day. Even God cannot save a perspn from the eventual death of the physical body. Does this mean that the statement in this mantra, "God helps one conquer death" is incorrect? The mantra in fact implies that a true yogi through samadhi attains God realization and bliss and then after the death of the physical body attains moksha and liberation of the birth and death cycle for an extremely long time. During the current life cycle, however, one who is born will certainly die.

This mantra states that God is Purusham Mahantam which means that God is eternally present and He is greater than the greatest. Moreover, God permeates everything in the universe and thus is inside everything. But, God is also outside everything and envelopes everything in the universe. The universe is immersed in God just like a cotton ball is immersed in water inside a bucket, whereby, water is both inside the cotton ball and outside it (also see mantra # 5). The second thing this mantra states about God is that God is the Supreme Light of Knowledge that enlightens our soul as well as God activates and lightens the whole universe, the sun, stars and galaxies. God has innate energy and is innately illuminated, God does not borrow it from others just like the sun is self-lit where as the moon does not have innate light but reflects the sunlight. When the sun rises in the morning it destroys the darkness of the night and everything on that side of earth becomes clearly visible. Similarly, the soul and mind (antahkaran) of a true yogi in the state of samadhi is directly enlightened by God and the yogi starts to see everything's true nature clearly without doubts and confusion.

Next this mantra states that God is beyond any deficiencies, shortcomings, ignorance or darkness, He is untouched by all of them. God, unlike humans is not afflicted by desires or vices such as anger, lust, greed, jealousy, prejudice, favoitism or pride. As stated arlier, in the state of samadhi the yogi not only is enlightened and gains knowledge directly from God but the yogi also becomes aware of the eisting deficiencies in his/her mind (antahkaran) as well as good and bad sanskars-dormant root impressions and imprints of the past deeds in the mind. With the enlightened knowledge the yoga practitioner is able to identify and understand the root cause(s) of the bad sanskars. Also, with the persistent practice of following a virtuous noble path in life, henceforth, the yoga practitioner can start weakening the bad sanskars. As the yoga practitioner advances in yoga practice (i.e following Patanjali's ashatang (eight-step) yogal), with the grace of God and constant hard effort the yogi is able to uproot and destroy all bad sanskars. When all of the old bad sanskars generated due to wrong knowledge, ignorance and following a sinful path in life in the past are destroyed as well as replaced with vittuous selfless deeds done in the service of God, then the person after the death of the current physical body attains moksha and does not take rebirth for an extremely long time. If there is no revirth for an extremely long time then there is no death for an extremely long time also, Thus, as this Veda mantra implies, when a person attains moksha, one figuratively conquers death.

Finally, when we think deeply, it becomes obvious that any person who is born and has a physical body will experience unhappiness, discouragement and suffering at sometime or the other during his/her lifetime before he/she dies. Most persons believe that the solution to overcoming our unhappiness or suffering is by earning more and more wealth as well as by acquiring more and more physical goods and creature comforts. They feel that this will make us happier, more fulfilled and take us away from deprivation or suffering. All the sinful and evil deeds one performs in life such as lying, deception, violence etc are for the fulfillment of perceived wants and pleasures of the physical body. However, this is a mistaken notion, because all of the physical pleasures the wealth can buy are transient and mixed with unhappiness and suffering especially when one cannot fulfill them (also see page # 75). Even the super wealthy who can fulfill their wants and desires with their money after a while find them boring, unfulfilling and empty. The more one tangles into the fulfillment of physical pleasures and luxuries the more entangled one becomes without necessarily becoming happy and contented. As one advances in spiritual yoga one realizes that the less need one has for various physical things, the more fulfilled one would find oneself.

Moreover the soul, when it is in the conscious company of God in samadhi or moksha, experiences liberation, joy, bliss and enlightenment unmixed with any sorrow, pain or suffering. The only long term solution to ovecome unhappiness, discouragement and suffering is to have no rebirth i.e. physical body in the future (for a very, very, long time) and enjoy the bliss in the state of moksha. Therrefore, O wise persons! Do selfless virtuous deeds in life, follow God's teachings and no one else's, and finally make utmost effort to know the true nature of God and get consciously closer and closer to God through the practice of yoga meditation; there is no other way.

(For God's attributes, alos see mantras # 1,2,5,8,10, 20, 28, 30)

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप् प्रत्यय- 42

गतांक से आगे....

तुमुन्प्रत्यय (को, के लिए)

को या के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन्का तुम् शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है अतः इसके रुप नहीं चलते हैं।

उदाहरण- सः कार्य कर्तुम् इच्छति। यहां कृ धातु में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है अतः वाक्य का अर्थ हुआ ''वह कार्य करने को चाहता है''।

2. अहं फलानि खादितुम् इच्छामि।
मैं फलों को खाना चाहता हूं।
3. नेता सभायां वक्तुम् इच्छति।
नेता सभा में बोलना चाहता है।
4. बालिका विद्यालये पठितुम् इच्छति।
बालिका विद्यालय में पढना चाहती है।
5. कृष्णः ग्रामं गन्तुम् इच्छति।
कृष्ण गांव को जाना चाहता है।
6. त्वं गुरुं वन्दितुम्ब इच्छ ।
तुम गुरु का अभिवादन करना चाहो।
7. षकः गां दोग्धुम् गच्छति ।
किसान गाय को दुहने को जाता है।
8. मल्लः मल्लं जेतुं शक्नोति ।
पहलवान पहलवान को जीत सकता है।
9. सा पीडां सोढुं जानाति।
वह दर्द को सहन करना जानती है।
10. पाचकः पक्तुं पाकशालां गच्छति।
रसोईया पकाने के लिए पाकशाला को जाता है।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

बच्चा क्यों नहीं बोलता

एक बार एक मौलवीजी का प्यारा बच्चा रात के समय अस्वस्थ हो गया। शरीर में कहीं पीड़ा थी। कहाँ पीड़ा है, यह बता सकने में बच्चा असमर्थ था। बच्चे की व्याकुलता के कारण माता-पिता भी बड़े दुःखी थे। वे मौलवी पण्डित श्री रामचन्द्र देहलवी के मिलने-जुलने वाले थे।

प्रातः पण्डितजी से कहने लगे, ''पण्डितजी रातभर हमारा बच्चा बड़ा रोता रहा। न जाने अल्लाह ने बच्चों को बेजुबाँ क्यों बनाया है?

श्री पण्डितजी बोले, ''इसलिए कि आप बेजुबानों (मूक पशुओं) पर दया करना सीखें।''

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

तिथियां परिवर्तित

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

यज्ञ: प्रात: 9:30 बजे **उद्घाटन** - प्रात: 11 बजे **ऋषि लंगर:** 1 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जनों की सूचनार्थ है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन - के.- 1046 का उद्घाटन समारोह किन्हीं कारणों से 4 फरवरी से स्थगित होकर **रविवार 11 मार्च, 2018** को निश्चित किया गया है। कार्यक्रम प्रात: 9:30 बजे यज्ञ के साथ आरम्भ होगा।

अत: आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। जल्दी ही सभा के निर्देशन में आर्यसमाज के इस नए भवन का निर्माण कार्य आरम्भ किया जाएगा।

- विनय आर्य, सभा महामन्त्री **रामभरोसे आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज**

आर्य समाज गांधीधाम का 64वां वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्य समाज गांधी धाम (कच्छ गुजरात) का 64वां वार्षिक अधिवेशन 12 से 14 जनवरी को झंडा चौक में मनाया गया। कार्यक्रम में प्रतिदिन बहन नन्दिता शास्त्री (पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी) के ब्रह्मत्व में आत्मकल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में स्थानीय व विभिन्न क्षेत्रों से आये 151 यजमानों ने यज्ञ लाभ प्राप्त किया। यज्ञोपरान्त अमेरिका निवासी सर्वश्री गिरीश खोसला, विश्रुत आर्य ने ओ३म् ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी।

अमेरिका स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा के संस्थापक व जीवनप्रभात के कुलपिता आर्य पथिक वानप्रस्थी श्री गरीश खोसला जी के 71वें जन्मदिन को सभी ने मिलकर बड़े धूमधाम से मनाया। आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आर्य समाज गांधीधाम ने संयुक्त रूप से शॉल, मेमेंटो और पगड़ी से श्री गिरीश खोसलाजी और आर्य समाज गांधीधाम ने संयुक्त रूप से शॉल, मेमेंटो ओर पगड़ी से श्री गिरीश खोसलाजी का अभिनन्दन किया। मुम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुनील मानकटाला, श्री चन्द्र भूषण गिरोत्रा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री हंसमुखभाई परमार (टंकारा), बुहद सौराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभाा के मंत्री श्री रणजीत सिंह परमार (राजकोट), राजस्थान अजमेर के पूर्व सांसद व आर्यसमाज गांधीधाम के संरक्षक श्री रासासिंह रावत विशेष रूप से इस अवसर पर उपस्थित रहे। गुजरात के राज्यमंत्री श्री वासणभाई आहिर ने आर्य समाज गांधीधाम के कार्यो को सराहा। समारोह में बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अन्त में प्रधान वाचोनिधि आचार्य ने सभी आगन्तुकों का कार्यक्रम को सफल बनाने में आभार व्यक्त किया।

- गुरुदत्त शर्मा, महामंत्री

के.एल. महता दयानन्द विद्यालयों ने मनाया प्रेरणा दिवस

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान एवं आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड ने अपने संस्थापक अध्यक्ष महात्मा कन्हैया लाल महता की पुण्यतिथि 'प्रेरणा दिवस' के रूप में के एल महता दयानन्द महिला महाविद्यालय में सम्पन्न की। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रेरक गीत प्रस्तुत किये गये। वक्ता योगिराज डॉ. ओम प्रकाश योगाचार्य (ओमयोग संस्थान) श्री योगेन्द्र शास्त्री (होशंगाबाद) एवं श्री ए.सी. चौधरी ने अपने श्रद्धापूर्ण शब्दों में इस बात पर बल दिया कि वर्तमान समय में शिक्षा की सही पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ नैतिक शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। अन्त में श्री आनन्द महता ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

- नीलम कालिया, प्रधानाचार्या

शोक समचार

स्वामी श्रोयानन्द विधेहयति जी

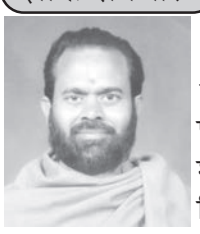

स्वामी श्रोयानन्द विधेहयति जी (मोहन गार्डन) का दिनांक 14 फरवरी 2018 को निधन हो गया अन्त्येष्टि संस्कार 14 फरवरी अपरांह् 1:30 बजे नवादा (उत्तम नगर के पास दिल्ली) शमशानघाट पर की गई जिसमें नगर के गणमान्य व्यक्ति एवं दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

डी.ए.वी.सी.सै. स्कूल, कादियां का स्थापना दिवस सम्पन्न

'डी.ए.वी. संस्था कादियां की बहुत पुरानी शैक्षिक संस्था है जिसकी स्थापना मेरे दादा जी ने की थी।' यह उद्गार आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामन्त्री एवं महात्मा कर्मचन्द के पौत्र अरुण अबरोल ने 24 जनवरी को आयोजित विद्यालय स्थापना दिवस समारोह में व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। स्कूल प्रधानाचार्य श्री सतीश गुप्ता द्वारा श्री अबरोल का स्वागत किया गया। श्री अबरोल ने जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्वेटर बांटे। इस अवसर पर महात्मा कर्मचन्द को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए चेयरमैन लक्ष्मण सिंह कोहाड़, कुसुम लता भण्डारी, भीम सैन सेठ, मिंटू सेखड़ी, पं. लेखराम स्मारक के मण्डल प्रधान सुशील अबरोल आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री गंगा राम, हरीश डोगरा, संजीव कुमार बलगन, रविन्द्र कुमार शर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय के

संस्थापक महात्मा कर्मचन्द की स्मृति में महात्मा निवास का उद्घाटन भी किया गया।

- प्रधानाचार्या

98 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बाजार सीताराम का 98वां वार्षिकोत्सव 16 से 22 अप्रैल 2018 को आर्य समाज मन्दिर में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। कार्यक्रम के अन्तर्गत ऋग्वेदीय वृहद यज्ञ आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री द्वारा सम्पन्न होगा एवं मधुर भजन श्री नारायण सिंह शास्त्री (नजफगढ़) प्रस्तुत करेंगे। - ***बाबूराम आर्य, मंत्री***

महर्षि महिमा पर्व ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज हावड़ा के तत्त्वावधान में महर्षि महिमा पर्व ऋषिबोधोत्सव पर पारिवारिक बहुकुण्डीय यज्ञानुष्ठान श्रीराम वाटिका में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रवचन आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री एवं पं. श्यामानन्दजी भजन प्रस्तुत किए।

- दीपक आर्य

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
स्वाध्याय प्रेमियों के लिए
365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें
वैदिक विनय
20% छूट के साथ मात्र 120/- रुपये में

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-2
नई दिल्ली-110048

प्रधान - श्री सहदेव नांगिया
मंत्री - श्री एस.के. कोहली
कोषाध्यक्ष - श्री आर.एन. सलूजा

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 फरवरी, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 फरवरी, 2018

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से
जोड़िए अपने मित्रों को और दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj

फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का व्हाट्एप्प
आओ जुड़ें - साझा करें विचार

महर्षि दयानन्द बोध दिवस का महत्त्व

आई है शिवरात आर्यो! ऋषि की याद दिलाने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

सत्य सनातन वेद धर्म को, भूल गए थे नर-नारी।
अविद्या रूपी अंधकार में, भटकी थी दुनियां सारी।।
छुआ-छात की, ऊंच-नीच की, फैल गई थी बीमारी।
ईश्वर पूजा बिसा दी थी, पत्थर पूजा थी जारी।
भटक रहे थे नर-नारी, ईश्वर के दर्शन पाने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

पनप गई थी फूट भयंकर, फैला था मतवाद यहां।
छोटी-छोटी बातों पर, होती थी रोज फसाद यहां।।
समझदार कम थे, ज्यादा थी मूढ़ों की तादाद यहां।
इसीलिए तो यवन ईसाई, पापी थे आबाद यहां।।
तरस रही थी आर्यवर्त की, जनता दाने-दाने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

ऋषियों-मुनियों के भारत में, गऊएं मारी जाती थीं।
लाखों विधवाएं बेचारी, हाय-हाय डकराती थी।
बाल-विवाह-अनमेल विवाह की, प्रथा थी तब जोरों पर।
धर्म-कम की जुम्मेदारी, थी पाखण्डी चारों पर।।
भूल गए थे नर-नारी, अपने इतिहास पुराने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

ईश्वर कृपा से भारत में, स्वामी दयानन्द आए।
किया वेद प्रचार रात-दिन, कभी न ऋषिवर दहलाए।।
गऊ, नारी को पूल्य बताया, निर्बल-निर्धन अपनाए।
'अंग्रेजों को मार भगाओ', भारत वासी समझाए।।
'पराधीनता पाप जगत में', आए थे समझाने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

आज करोड़ों पाखण्डी, इस देव भूमि में घूम रहे।
ऊंचे-ऊंचे भवन ठगों के, आसमान को चूम रहे।।
ईश्वर पूजा छुड़वाकर, अपनी पूजा नित करा रहे।
ईश्वर से है गुरु बड़ा, भोली जनता को डरा रहे।।
वेद सभ्यता-संस्कृति को, फिरते दुष्ट मिटाने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

जगत गुरु ऋषि दयानन्द के, वीर सैनिको, जागो तुम।
करो परस्पर मेल, आर्यो! कलह-फूट को त्यागो तुम।।
करो वेद प्रचार जगत में, अविद्या रूपी तिमिर हरो।
लेखराम श्रद्धानन्द बनकर, मित्रो! परोपकार करो।।
'नन्दलाल निर्भय' चौंका दो, वीरो! सकल जमाने को।
स्वामी दयानन्द आए थे, वैदिक नाद बजाने को।।

- पं. नन्दलाल निर्भय 'सिद्धान्ताचार्य'
ग्राम+पो. बहीन, पलवल (हरि.)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह